

NEP 2020 और आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का एकीकरणडॉ अंजना कुमारी¹DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.23750517>

Review: 25/09/2026

Acceptance: 29/09/2026

Publication: 29/10/2026

सार: हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ओजपूर्ण ध्यान केंद्रित किया गया और शिक्षा का स्वरूप भी इतनी व्यवहारिकता प्रदायी रही है जो व्यक्ति के जीवन को सरल एवं सुलभ बनाती है। प्राचीन काल की भारतीय ज्ञान परंपराएं और संस्कृति मानवता को प्रोत्साहित करती रही है। संपूर्ण वैदिक साहित्य- रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति ग्रंथ, दर्शन धार्मिक ग्रंथ, काव्य, नाटक, व्याकरण तथा ज्योतिष शास्त्र संस्कृत भाषा में उपलब्ध होकर भारतीय ज्ञान को महिमामयी और गौरवमयी आधार प्रदान कर महिमा- मंडित करते हैं जिसने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा में अभूतपूर्व सफलता पाई है। यह सर्वाविदित है सुसंस्कृत ज्ञान से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है। संस्कारों से मानसिक, कायिक, वाचिक पवित्रता के साथ पर्यावरण में भी शुद्धता एवं स्वच्छता आती है। भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। परवर्तित आधुनिक सामाजिक परिवेश एवं भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षण व्यवस्था को समावेशी बनाना अत्यावश्यक है। यह समावेशी व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा की शिक्षण पद्धति को लिए बिना नहीं चल सकता है क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता की दौड़ की ओर तेजी से अग्रसर हो रहे हैं वही हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान परंपरा को हम भूलते जा रहे हैं इस अंधानुकरण में हमारे वही स्थिति हो चुकी है जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है यदि दृष्टिहीन का रास्ता दिखाने वाला ही दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाएगा। हमारे भारत भूमि की अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पुरातन युग से समृद्ध रही है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आ रही तथाकथित नवीन खोजें जो हमारे ग्रंथों में उल्लेखित है भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धिशाली होने का प्रमाण है।

शब्द कुंजी: भारतीय ज्ञान परंपरा, वैदिक साहित्य, अद्वितीय ज्ञान एवं प्रज्ञा।

परिचय: - भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान एवं प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। भारत की ज्ञान परंपरा अपने समाज और संस्कृति से निः सृत है। भारत की परंपरा समावेशी, करुणामूलक, समतामूलक रही है। इसलिए भारतीय संस्कृति सदैव सामासिक रही है। यह समासिकता ही राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान करता है और पूरे देश को

¹ सहायक प्राध्यापिका, मुंडेश्वरी कॉलेज फॉर टीचर एडुकेशन, पटना, बिहार, इंडिया।

राष्ट्रीय एकता अखंडता के सूत्र में बांधता है। भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत समृद्ध रही है। इसका अतीत काफी स्वर्णिम रहा है। भारत का अतीत इतना गौरवशाली रहा है कि वह दुनिया की नजर में हमेशा जिज्ञासा का केंद्र रहा है यही कारण है कि इस देश में पूरी दुनिया से आए लोग रच बस गए और यह क्रम आज भी गतिमान है। भारत की समृद्ध विरासत है जो कई सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है यह परंपरा वैदिक और उपनिषद् काल से बौद्ध और जैन काल तक रही है। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, पल्लवी, उज्जैनी, काशी जैसे विश्व प्रसिद्ध शिक्षा के केंद्र थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्रीय स्तंभ माना गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े संप्रत्ययों को पाठ्यचर्या में जोड़ने की पहल की है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय का एक प्रभाग है, जिसका लक्ष्य स्वदेशी भारतीय ज्ञान को बढ़ावा देना है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली या आई.के.एस.(इंडियन नॉलेज सिस्टम) की अवधारणा:- भारतीय ज्ञान प्रणाली आई. के. एस. शिक्षा मंत्रालय के तहत AICTE की नई दिल्ली में एक प्रकोष्ठ है। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रभाग की स्थापना अक्टूबर 2020 में की गई थी। इसका उद्देश्य आई के एस सभी पहलुओं पर अंतःविषय और अंतर विषय अनुसंधान को बढ़ावा देना, सामाजिक अनुप्रयोग को बढ़ावा देना शामिल है। ताकि छात्रों को भारत के समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर का ज्ञान मिलता रहे। आई. के. एस. के क्रियान्वयन से न केवल शिक्षा में क्रांति आएगी, बल्कि भारतीय मानस और जीवन शैली में एक नया जोश आएगा। भारतीय ज्ञान परंपरा के विचार, ज्ञान, परंपरा, कला कौशल शिल्प कौशल और प्रबंधन को विभिन्न क्षेत्रों में शामिल करके भारत की शिक्षण प्रणाली, जिसका उद्देश्य भारत की प्राचीन ज्ञान, परंपरा को पुनर्जीवित करना है, में अप्रत्याशित परिवर्तन आएगा। आने वाले दशकों में आई. के. एस. क्षेत्र से पांच मिलियन से अधिक रोजगार सृजित होने की उम्मीद है जिससे भारत का आत्मसम्मान और स्वाभिमान बढ़ेगा।

आई.के.एस. का महत्वपूर्ण पक्ष:-

1. भारतीय ज्ञान परंपरा या भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रभाग की स्थापना अक्टूबर 2020 में की गई थी। भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत आने वाला प्रकोष्ठ है। इसकी स्थापना आई.के.एस.जुड़े सभी पहलुओं पर रिसर्च पर बढ़ावा देने के लिए की गई थी।
2. आई.के.एस. में आदिवासी ज्ञान और सीखने के पारंपरिक तरीके शामिल हैं। इसमें गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन योग, वास्तु कला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, शासन राजनीति संरक्षण जैसे विषय शामिल हैं।
3. आई.के.एस. को वैज्ञानिक तरीके से स्कूल और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाएगा।
4. भारत के राष्ट्रीय शिक्षा नीति एन.ई.पी.2020 को भारतीय ज्ञान परंपराओं के आधार पर पुनर्गठित किया जा रहा है।

5. आई.के.एस. की नीब वैदिक साहित्य उपनिषद, वेद और उपवेद है। भाषाओं का डिजिटल संसाधन किया जाएगा, अनुवाद परियोजनाएं बनाए जाएंगे, भाषा पुनरोद्धार के प्रयास करने के उपाय किए जाएंगे। सांस्कृतिक विसर्जन कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

भारतीय ज्ञान परंपरा के उद्देश्य:-

भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में एकीकृत करना। अतः विषयक अनुसंधान को बढ़ावा देना। पारंपरिक और समकालीन ज्ञान के बीच की खाई को पाटना। स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण और प्रसार करना। भारत की विरासत का प्रसार करना और आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करना। प्राचीन काल से ही हमारा देश प्राचीन मूल्य एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारत भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पुरातन युग से बहुत समृद्ध रही है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आ रहे तथाकथित नवीन खोज जो हमारी ग्रंथों में पहले से उल्लेखित हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है। आधुनिक युग में डिप्रेशन तनाव एंजायटी एवं मेटल ड्रामा के शब्दों का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में बढ़ गया है। आज की युवा पीढ़ी पश्चात जगत के जीवन शैली को अपनाने के कारण इन शब्दों को अपने जीवन में समाहित कर चुकी है। किंतु पुरातन काल में ऐसी मनोवृत्ति नहीं थी। इसका कारण भारतीय दर्शन था। अतः हम सभी का कर्तव्य बनता है कि भारतवर्ष की अनमोल धरोहर ज्ञान को सुरक्षित रखें, ताकि विश्व का कल्याण हो एवं भारत की आने वाली पीढ़ियां भारत को हीन दृष्टि से न देखकर गौरवपूर्ण दृष्टि से देखें। आइंस्टीन ने कहा था हम भारतीयों के बहुत ऋणी हैं जिन्होंने हमें गिनना सिखाया। निष्कर्षतः भारतीय ज्ञान परंपरा आज के परिदृश्य में लागू होनी चाहिए। जो तनाव, प्रबंधन स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का विशाल भंडार प्रदान करती है। जिसका उपयोग लोगों समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता:-

भारतीय ज्ञान परंपरा को एन ई पी 2020 ने प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और विचार के समृद्ध विरासत को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में मान्यता प्रदान करना चाहता है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों में ज्ञान विज्ञान, जीवन दर्शन, भाषा, अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और ज्ञान विश्लेषण की अद्वितीय एवं अप्रतिम रहस्य छुपे हुए हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से समृद्ध और संरक्षित ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी व्यवस्थित और संगठित प्रणाली विधि द्वारा पहुंचाई जा सकती है। वैदिक साहित्य उपनिषद भेद उपवेद भारतीय ज्ञान प्रणाली के नीब है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई के एस) प्राचीन ज्ञान विज्ञान, दर्शन, कला, भाषा- साहित्य की गहन समझ प्रदान करता है। जिसका उद्देश्य भारत के प्राचीन परंपराओं और ज्ञान को पुनर्जीवित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के शाश्वत ज्ञान एवं विचारों से समृद्ध परंपरा के विवेकशील पक्ष को आधार बनाया है। पौराणिक कौशल को नई तकनीकी आधार पर आधारित करने की कोशिश की जा रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को एक केंद्रीय स्तंभ माना गया है। जहां शिक्षा के प्राथमिक इकाई अर्थात् पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर शिक्षा के अंतिम इकाई अर्थात् प्रौढ़ शिक्षा तक प्राचीन भारतीय ज्ञान को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। यह शिक्षा नीति एक ऐसी कल्पना करती है कि विद्यार्थी अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थाई विकास समृद्ध जीवन यापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके। तभी उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता है। इस कल्पना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए शाश्वत ज्ञान परंपरा प्रथा, विचार मूल्यों को नवचरित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा, ना कि एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान किया जाए तभी बालक का विकास सनातनी ज्ञान के अनुरूप संभव हो सकता है। एक ऐसी शिक्षण व्यवस्था होगी जिसमें कोई भी शिक्षार्थी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं अन्य किसी। भेदभाव के कारण पीछे नहीं रहेगा। इसके लिए सर्व शिक्षा अभियान को समग्र शिक्षा के रूप में परिभाषित करते हुए वर्ष 2030 तक सही बच्चों को प्राथमिक स्कूलों में 100% नामांकन करने का लक्ष्य रखा गया है, जो भारत को नई दिशा प्रदान करने में सहायक होगी। भारतीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं के संदर्भ में स्वीकार करती है कि भारतीय भाषाएं दुनिया में सबसे समृद्ध सबसे वैज्ञानिक सबसे सुंदर सबसे अधिक अभिव्यंजक भाषाएं हैं, जिनमें प्राचीन और आधुनिक साहित्य गद्य पद्य दोनों के विशाल भंडार हैं। सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से सभी युवा भारतीयों को अपने देश की भाषाओं के विशाल और समृद्ध भंडार उनके साहित्य के खजाने के बारे में जागरूक जरूर होना चाहिए। भाषा रूपी असंगतता को समाप्त करते हुए इस शिक्षा नीति ने सभी बच्चों की प्राथमिक स्तर की शिक्षा को अपनी मातृभाषा हिंदी या स्थानीय भाषा और गैर हिंदी प्रदेशों हेतु में प्रदान करने की बात करती है, जो बालक के मूलभूत आवश्यकताओं एवं मूल्यों को जानने एवं समझने में आसानी हो जाती है। इसके द्वारा बालक अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा। सामाजिक विज्ञान में समाहित लक्ष्य एवं विषय इतिहास भूगोल राजनीति समाजशास्त्र आदि भारतीय ज्ञान परंपरा स्थापित कला एवं परंपरा आदि के बारे में सीखने और सुअवसर प्रदान करती है। इस प्रकार भाषागत साहित्य एवं उन विषयों के पाठ्यक्रम में स्थानीय ज्ञान एवं सनातन ज्ञान की उपलब्धता बालक को अपने देश के बारे में जानने में मदद मिलेगी।

भारतीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय भाषाएं

भारत एक सामाजिक सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण बहुभाषिक देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 1369 भाषा और बोलियों की उपस्थिति दर्ज की गई थी। जिनमें से 121 भाषाएं ऐसी हैं जिनके बोलने वाले की संख्या 10000 से अधिक है। भारतीय संविधान में अनुसूचित 22 भाषाएँ भारत की 96% आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। भाषिक रूप से समृद्ध इस देश का स्याह पक्ष यह है उजागर करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात को रेखांकित करती है कि पूर्ववर्ती नीतियों में भाषा संरक्षण के बारे में कोई ठोस उपाय नहीं किए गए थे। दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं को समुचित ध्यान और देखभाल नहीं मिल पाई, जिसकी वजह से देश में विगत 50

वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया। यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तप्राय घोषित किया है। बहुत सी भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं विशेष रूप से वे जिनकी लिपि नहीं है। जब किसी समुदाय जनजाति के उस भाषा के बोलने वाले वरिष्ठ सदस्य की मृत्यु हो जाती है तो अक्सर वह भाषा भी उनके साथ ही समाप्त हो जाती है। अभी तक इन समृद्ध भाषाओं/संस्कृति की अभिव्यक्तियों की को संरक्षित या उनमें रिकॉर्ड करने के लिए कोई ठोस कार्रवाई या उपाय नहीं किए गए थे। इस दृष्टि से किसी संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार हेतु हमें इन संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना ही होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं अर्थात् अपने देश की भाषाओं के विशाल और समृद्ध भंडार उनके साहित्य के खजाने को संरक्षित और सुरक्षित रखना चाहती और सभी युवाओं को इसके लिए जागृत करना चाहती है।

त्रिभाषा सूत्र

त्रिभाषा सूत्र को 1968 में कोठारी आयोग की सिफारिश के तहत शिकार किया गया और 1986 1993 और 2005 की शिक्षा नीतियों के द्वारा रूपांतरण करते हुए दोहराया गया इस नीति के अनुसार आधुनिक भारतीय भाषाओं के अंतर्गत हिंदी वार्षिक क्षेत्र में दक्षिण भारत की एक भाषा के साथ हिंदी अंग्रेजी का ज्ञान करवाया जाएगा जबकि दक्षिण भारतीय प्रदेशों में वहां की क्षेत्रीय भाषा के साथ हिंदी अंग्रेजी सिखाई जाएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं के महत्व को स्वीकार कर रहे हैं बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के साथ अध्ययन अध्यापन में भाषा संबंधी बढ़ाओ को दूर करने पर जोर दिया गया इस संबंध में उल्लेखनीय बिंदु निम्नलिखित हैं:-

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 या मानती है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा या मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेज सीखते हैं और समझ लेते हैं इसलिए जहां तक संभव हो कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन यह बेहतर होगा कि ग्रेड 8 तक और उससे आगे तक भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा मातृभाषा या स्थानीय भाषा क्षेत्र या क्षेत्रीय भाषा होगी।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रावधान किया गया है कि बच्चों द्वारा सखी जाने वाली तीन भाषाओं के विकल्प राज्यों क्षेत्र और निश्चित रूप से छात्रों के स्वयं के होंगे जिनमें से कम से कम तीन में से दो भाषण भारतीय भाषा हो।
3. राज्य न केवल त्रिभाषा फार्मूले को अपने अपितु देश भर में भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए बड़ी संख्या में शिक्षकों को नियुक्त करने के लिए द्विपक्षीय समझौता करें।
4. भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के साथ उनकी सामान्य व्याकरणिक संरचना इन भाषाओं की शब्दावली के स्रोत एवं उद्योगों को ढूंढने और अंतर को जानने के लिए 6 से 8 ग्रेड के विद्यार्थियों का द लैंग्वेज ऑफ इंडिया जैसे प्रोजेक्ट गतिविधि में भाग लेना होगा जिससे वह जान सकेंगे कि भारत के किस भौगोलिक भाग में कौन सी भाषा बोली जाती है इससे न केवल आदिवासी भाषाओं की प्रकृति और संरचना

को जानने या समझने के साथ बल्कि भारत के हर प्रमुख भाषा के समृद्ध और उभरते साहित्य के बारे में भी अपनी जानकारी के विस्तार विद्यार्थी कर पाएंगे। इन गतिविधि से उन्हें भारतीय एकता विविधता का एहसास करने के साथ सुंदर सांस्कृतिक विरासत से भी रूबरू हो पाएंगे।

5. स्कूली बच्चों में बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने के लिए त्रिभाषा फार्मूला का जल क्रियान्वयन करने के साथ जहां तक संभावना हो मातृभाषा / स्थानीय भाषा में शिक्षक तथा अधिक अनुभव आधारित भाषा शिक्षण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
6. इसके अलावा भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लेखित प्रत्येक भाषा के लिए अकादमी स्थापित की जाएगी इनमें हर भाषा के श्रेष्ठ विद्वान एवं मूल रूप से उसे भाषा को बोलने वाले लोग शामिल होंगे ताकि नवीन अवधारणाओं का सरल किंतु सटीक भंडार तय किया जा सकेगा तथा नियमित रूप से नवीनतम शब्दकोश जारी किया जा सकेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के क्षेत्र के प्रत्येक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को शामिल करने पर बल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं छात्र दोनों को न केवल अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराएगी अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक सततता का अवबोध करने की ओर अग्रसर भी करेगा। हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जो प्रायः मनसा, वाचा, कर्मणा पर आधारित थी इसने सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक आर्थिक राजनीतिक भावात्मक आदि विकास पर ध्यान केंद्रित किया था तथा आत्मनिर्भरता, सम्मान, सत्यता, नम्रता जैसे सनातन मूल्यों के सृजन पर बल दिया गया था। जो यह दर्शाता है कि आदिकाल से ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यावहारिक एवं दैनंदिनी जीवन को सुचारू रूप से संचालित करने में सहायक रहा है। इससे यह पता चलता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही बल्कि भूतकाल में जन्मे सभी महान व्यक्तित्व जैसे- चरक, रामानुजम, आर्यभट्ट बुद्ध, रविदास, वाल्मीकि, बिस्मिल्लाह खान, महात्मा गांधी, भगत सिंह, गांधी, आपला घोष, सावित्री, रमाबाई, घोषा, सावित्री बाई फूले, रजिया सुल्ताना, मदर टेरेसा आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की प्रासंगिकता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रही है। जिसे एक स्वस्थ भारतवर्ष एवं संस्कृति को पुनः स्थापित किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह व्यापक दृष्टिकोण शिक्षक-शिक्षार्थी में नैतिक सामाजिक और बौद्धिक क्षमता का सृजन करने में सहायक हो सकेगा। भारतीय दृष्टिकोण से ज्ञान प्राप्त करके ही हम विश्व गुरु बनने की कल्पना कर सकते हैं। क्योंकि किसी भी देश का विकास उसके स्वयं की सृजनात्मक एवं अनोखेपन पर निर्भर करता है। वहीं भारत वर्ष तो भिन्न - भिन्न सांस्कृतिक गौरव से ओत- प्रोत देश है। भारत को अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा को पुनः उद्घोषित करने का प्रयास करना होगा।

निष्कर्षतः

भारतीय ज्ञान परंपरा आज के परिदृश्य में लागू होनी चाहिए। जो तनाव प्रबंधन स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का विशाल भंडार प्रदान करती है। जिसका उपयोग लोगों, समुदाय और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। और फिर राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शायद पहले ऐसा राष्ट्रीय प्रयास है जिसने भारतीय भाषाओं के बारे में समग्रता के साथ चिंतन किया है। यह नीति एक ओर भारतीय भाषाओं के अध्ययन- अध्यापन और अनुसंधान का स्वाभाविक मार्ग बताने का ठोस कार्य योजना प्रस्तुत करती है, वहीं दूसरी ओर मातृभाषा को शिक्षण अधिगम का माध्यम बनाने का साहसिक निर्णय लेती है।

संदर्भ- सूची:--

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal. (n.d.). Article download. Retrieved from <https://www.aarhat.com/download-article/1006/>

AIJRA. (2024). AIJRA Vol. 9 Issue 1. Retrieved from <https://www.ijcms2015.co/file/2024/aijra-vol-9-issue-1/aijra-vol-9-issue-1-40.pdf>

Bhishma Indian Knowledge Systems Foundation. (n.d.). Workshops on Indian Knowledge Systems Foundation Retrieved from <https://www.bhishmaiks.org/workshops/iks>

Indian Knowledge Systems Foundation India. ; (n.d.), ; Mission, Retrieved from <https://iksindia.org/mission.php#:~:text=Promote%20and%20enable%20further%20research,%2C%20environment%2C%20and%20sustainable%20development>